Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB 2023, VOL- 10/75

समावेशी शिक्षाः आधुनिक युग की आवश्यकता

बलविंदर सिंह, शोधार्थी, शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

भूमिका :– समावेशी का अर्थ है, बिना किसी डर के प्रतिनिधिनित्व करना है. समावेशी को एक समानता के अधिकार के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें सभी को बोलने, सुनने तथा भाग लेने का अधिकारमिलता है. यह किसी के उस विकार या परेशानी को दूर करने का माध्यम है जो उसनेखुद से नहीं किया है

समावेशी शिक्षा क्या है ?

समावेशन का अर्थ है सम्मिलित करना।

समावेशी शिक्षा का अर्थ विकलांग बच्चों या किसी भी विविध पृष्ठभूमि के बच्चों को उसी उम्र के बच्चों के साथ नियमित कक्षाओं में रखना और शिक्षित करना है जिनमें विकलांग नहीं हैं।

समावेशी शिक्षा का तात्पर्य है किस भी बच्चे शामिल होते हैं और उनके स्थानीय स्कूलों द्वारा उपयुक्त नियमित कक्षाओं में नामांकित होते हैं और उन्हें स्कूल के अस्तित्व के सभी हिस्सों में सीखने, योगदान करने और भाग लेने का पूरा अवसर मिलता है।

समावेशी शिक्षा में 'सामान्य बालक' और 'विशिष्ठ बालक' एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसमें विशिष्ठ बालकों के लिए उचित वातावरण बनाया जाता है जिससे सामान्य बच्चों और विशिष्ठ बच्चों को एक साथ शिक्षा ग्रहण करने का मौकामिलता है.

समावेशी शिक्षा की परिभाषा –

- **डकारवर्ल्ड एजुकेशन फोरम के अनुसार :** समावेशी शिक्षा का मतलब है कि स्कूलों को सभी छात्रों को उनकी शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, भाषाई या अन्य स्थितियों की परवाह किए बिना समायोजित करना चाहिए। इसमें विकलांग और प्रतिभाशाली, कामकाजी छात्र, दूरस्थ और घुमंतू आबादी के छात्र, भाषाई, जातीय या सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों के छात्र और अन्य वंचित या सीमांत क्षेत्रों या समूहों के छात्र शामिल होने चाहिए।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- **'यरशेल' के आनुसार** "समावेशी शिक्षा के कुछ कारण योग्यता, लिंग, जाति, प्रजाति, भाषा, चिंता स्तर, सामाजिक आर्थिक स्तर, विकलांगता, लिंग व्यवहार या धर्म से संबंधित होते हैं."
- **'स्टीफन तथा ब्लेंकहर्ट' के अनुसार** "शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित बच्चों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षक व्यवस्था करना है. यह समान अवसर मनोवैज्ञानिक सोच पर आधारित है, जो व्यक्तिगत योजना के द्वारा उपयुक्त सामाजिक मानकीकरण और अधिगम को बढ़ावा देती है."

• 'शिक्षाशास्त्री' के अनुसार "समावेशी शिक्षा में 'सामान्य बालक' और 'विशिष्ठ बालक' एक ही विद्यालय में बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण करते हैं."

समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए यूनिसेफ का काम –

विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा के अंतर को कम करने के लिए, यूनिसेफ समावेशी शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने और निगरानी करने के सरकारी प्रयासों का समर्थन करता है।यूनिसेफ का काम चार प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित है :

हिमायत : यूनिसेफ विचार–विमर्श, उच्च–स्तरीय आयोजनों और नीति निर्माताओं और आम जनता की ओर पहुंच के अन्य रूपों में समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देता है।

जागरूकता बढ़ाना : यूनिसेफ सरकारी भागीदारों के लिए अनुसंधान आयोजित करके और राउंडटेबल्स, कार्यशालाओं और अन्य कार्यक्रमों की मेजबानी करके विकलांग बच्चों की जरूरतों पर प्रकाश डालता है।

क्षमता निर्माण : यूनिसेफ शिक्षकों, प्रशासकों और समुदायों को प्रशिक्षण देकर और सरकारों को तकनीकी सहायता प्रदान करके भागीदार देशों में शिक्षा प्रणालियों की क्षमता का निर्माण करता है।

कार्यान्वयन समर्थन : यूनिसेफ नीति और अभ्यास के बीच कार्यान्वयन की खाई को पाटने के लिए भागीदार देशों में निगरानी और मूल्यांकन में सहायता करता है।

समावेशी शिक्षा का सिद्धांत –

एक बच्चे को सीखने के लिए अच्छे वातावरण की आवश्यकता होती है, जहाँ उसकी सामाजिक और भावनात्मक जरूरतें पूरी होती है स्कूल का परिवेश बच्चे के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। समावेशी शिक्षा सभी तक सामान रूप से पहुंचे सबकी सामान भागीदारी हो, शोषित वर्ग का अंत हो और एक समतामूलक समाज की स्थापना हो।

• **पहुँच** – हर बच्चे की जरुरत के प्रति संवेदनशील होना, बच्चे पर सामाजिक रूप से प्रासंगिक और न्यायोचित सीखाने की प्रक्रिया प्रदान करना। शिक्षक अपने कौशल रवैये और प्रोत्साहन द्वारा सुविधाहीन और अधिकारहीन समुदाय के बच्चों की संलिप्तता, प्रतियोगिता व उपलब्धि उल्लेखनीय ढंग से बढ़ा सकते हैं. विद्याालयों की व्यवस्था को अच्छा बनाना होगा। विद्याालय भवन में शौचालय, पीने का पानी, खेल का मैदान, शिक्षक तथा अन्य भौतिक संसाधन उपलब्ध कराने होंगे। शिक्षकों को अधिक से अधिक अभिभावकों के संपर्क में रहना होगा और बच्चों की कमियों को दूर करने का प्रयास करना होगा।

• **समानता** – समानता एक ऐसी अवस्था है, जिसमे सभी व्यक्ति समान परिस्थितियों में सामान व्यवहार का अधिकार रखते हैं। समानता बिना किसी भेदभाव के व्यक्ति को सभी संसाधनों पर सामान रूप से पहुँच प्राप्त करने का अधिकार है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में समानता के उद्देश्य को साकार बनाने के लिए सभी को शिक्षा का सामान अवसर उपलब्ध कराना और सभी को शिक्षा में सफलता प्राप्त करने का अवसर मिल सके।

• **भागीदारी** – शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है कि छात्रों को सार्थक शिक्षा अनुकूल पर्यावरण में उपलब्ध कराई जाए, जिससे वे जीवन मार्ग में सफल हो सकें। हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले और इसमें योग्यता, शारीरिक अक्षमता, भाषा, संस्कृति, उम्र, लिंग आदि अवरोध पैदा ना करे। हर बच्चा जो विद्यालय में प्रवेश लेता है उसकी विद्यालयी गतिविधियों में संपूर्ण भागीदारी हो। प्रत्येक बच्चे को महत्व देना अनिवार्य है, क्योंकि इससे बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है, अनुशासन और बच्चों के व्यवहार में सुधार होता है। यदि बच्चे विद्यालयी जीवन तक नहीं पहुँचपाते हैं तो उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विद्यालय में बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है, इसलिए जब बच्चे विद्यालय में प्रवेश लेने के पश्चात उसे कक्षा की समस्त गतिविधियों में शामिल करना भी आवश्यक है।

• **प्रासंगिकता** – समावेशी शिक्षा प्रत्येक बच्चे के लिए उच्च और उचित उम्मीदों के साथ उसको व्यक्तिगत लक्ष्यों पर काम करने के लिए अभिप्रेरित करती है। इसका उद्देश्य तो सभी वर्गों के बच्चों को एक ही छत के नीचे शिक्षा देना है। इसमें बच्चों को सामाजिक, जातिगत, आर्थिक वर्गीय, लैंगिक, शारीरिक और मानसिक दृष्टि से भिन्न–भिन्न देखे जाने के बजाए एक सामान रूप में देखा जाता है। बच्चों को सीखने के लिए उचित वातावरण व अवसर देने की आवश्यकता है।

• **सशक्तिकरण** – समावेशन का एक सिधान्त सभी वर्गों के बच्चों को सशक्त बनाना भी है। विद्यालय स्तर पर प्रत्येक बच्चे को सशक्त बनाने के लिए हम निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं

• बच्चे को समझना आवश्यक है।

• प्रत्येक बच्चे का सम्मान करना आवश्यक है।

• बच्चे को शारीरिक व मानसिक दंड से दूर रखना आवश्यक है।

• एक शिक्षक को बच्चे के प्रति सकारात्मक सोच आवश्यक है।

• बच्चों को भी कभी शिक्षक की भूमिका निभाने का अवसर मिलना चाहिए।

• प्रत्येक बच्चे को उसके उत्तरदायित्व का एहसास करना जरुरी है।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता और महत्व –

शिक्षा हर बच्चे का अधिकार है, हर बच्चे को सामान शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता होती है

• **मानवाधिकार** – सभी बच्चों को एक साथ सीखने की आवश्यकता है, कोई भी अधिगम क्षमता, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण बच्चों में भेदभाव नहीं कर सकता है।

• **शिक्षा** – समावेशित वातावरण में बच्चें शैक्षिक व सामाजिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं, प्रतिबद्धता और समर्थन को देखते हुए समावेशी शिक्षा शैक्षिक संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग है।

• सामाजिक दृ सभी बच्चे अपने आसपास के विभिन्न लोगों से सम्बन्ध बनाते हैं और यह उन्हें जीवन की मुख्यधारा के लिए तैयार करता है. समावेशन में डर कम करने और मित्रता विकसित करने की क्षमता होती है और दोस्तों के बीच आपसीसम्मान, समझ और करुणाबढ़ जाती है। समावेशी शिक्षा विभिन्न तरीकों से बच्चों के विकास में मदद करती है। विशिष्ठ रूप से बाधित बच्चे शारीरिक, संज्ञात्मक और सामाजिक विकास व कौशलों में बहुत अच्छी तरक्की करते हैं. जब हम बच्चों को स्कूलों में समावेशी शिक्षा से अलग करते हैं, तो समाज में भी उनको समानता नहीं मिलेगी. ऐसे बच्चों को बाद में समुदाय के किसी प्रयोजन में शामिल करना मुश्किल हो जाता है। इस प्रकार समावेशी शिक्षा एक समावेशी समाज की नींव डालती है।

समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक –

समावेशी शिक्षा एक वैश्विक प्रवृत्ति है, स्कूलों को सभी समुदाय के बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार, उनकी क्षमताओं की परवाह कि ये बिना शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

• **शिक्षार्थियों में विविधता** – एक ही आयु के बच्चों के समूह में भी बहुत विविधता है. बच्चे अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि, प्रेरणा, सीखने की क्षमता व्यक्तिगत गुण, जो पढाई में सफलता, अभिवृत्तियाँ, रुचियाँ, और प्रतिबद्धताओं आदि में एक–दूसरे से भिन्न है।

• **भौतिक सुविधाएँ –** समावेशी शिक्षा प्रत्येक शिक्षक के लिए कक्षा का स्थान, जगह और व्यवस्था एक अनिवार्य कारक है। कई स्कूलों में अधिगम के लिए उपयुक्त मूल सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं है। शोर–शराबे से दूर जगह, कमरों में उचित हवा का आवागमन, कक्षा के अंदर और बाहर स्वतंत्र गति करने की जगह, खेलने के लिए मैदान, अन्य पाठ्येत्तर क्रियाओं का प्रावधान समावेशी शिक्षा का समर्थन करने के लिए अनिवार्य है।

• **शिक्षकों की तैयारी –** प्रत्येक शिक्षक में बच्चे की आवश्यकता को पहचानने का कौशल होना चाहिए। परंतु शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम इस मुद्दे पर कभी बात नहीं करते। कक्षा में दैनिक रूप से विविधता का ध्यान रखने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। हमारे देश में इस आवश्यकता पर ध्यान नहीं दिया जाता है, इसीलिए यह समावेशी शिक्षा के लिए खतरा हो सकता है।

• **संसाधनों की उपलब्धि –** हमारे स्कूलों में अधिगम क्रिया का समर्थन करने हेतु संसाधनों की उपलब्धि के बारे में सोचा नहीं गया है। शिक्षक विभिन्न अधिगम सामग्रियों का प्रयोग नहीं कर पाते हैं।

• **मूल्यांकन व्यवस्था –** हमारी परीक्षा व्यवस्था में इतनी कठोरता है कि बच्चे का आकलनगलत हो जाता है। विविध शिक्षार्थियों के लिए विविध मूल्यांकन व्यवस्था की जरुरत है। यदि बच्चा लिख नहीं सकता, तो उसकी बाकी क्षमताएँ छिपी रह जाएंगी। यदि बच्चे को पढने, लिखने के अलावा कोई और मूल्यांकन के तरीके की जरुरत है तो वह हमारे पास है ही नहीं। इससे बच्चा परेशान हो जाता है।

समावेशी शिक्षा के लाभ –

• समावेशी शिक्षा गरीबी और अपवर्जन के चक्र को तोड़ने में मदद कर सकती है।

- यह भेदभाव को मिटती है, जो हर समाज में बड़े पैमाने पर फैला है।
- यह बच्चों को उनके परिवारों और समुदायों के साथ रहने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- इससे बच्चों में घृणा की भावना समाप्त हो जाती है।
- समावेशी शिक्षा के कारण विशिष्ठ रूप से बाधित बच्चों में और सामान्य बच्चों में आप सीमित्रता अच्छी रहेगी।
- यह स्कूल का वातावरण सुधारती है, जिसका लाभ सभी बच्चों को मिलता है।

समावेशी शिक्षा में आने वाली बाधाएं –

समावेशी शिक्षा के दौरान अनेक समस्याओं या बाधाओं का सामना करना पड़ता है जिसमें से कुछ प्रमुख समस्या या बाधा इस प्रकार हैं–

शिक्षक में शिक्षण कौशलों की कमी : समावेशी शिक्षा में विशिष्ट एवं सामान्य बालक अक्षम बालक सभी एक साथ एक ही कक्षा में शिक्षा ग्रहण करते हैं और यही कारण है कि एक शिक्षक को उन सभी बालकों को समान रूप से शिक्षा प्रदान करने की क्षमता होनी चाहिए उन्हें कक्षा के अनुरूप विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करना आना चाहिए साथ ही एक शिक्षक में इतनी शिक्षण कौशलों का विकास होना चाहिए कि वह विशिष्ट एवं सामान्य बालकों की समस्या को समझ कर उनकी समस्या का समाधान कर सके पर ये क्षमता सभी शिक्षक पर नहीं पाया जाता है। इसलिए समावेशी शिक्षा की सबसे बड़ी समस्या शिक्षक में शिक्षण कौशलों का विकास में कमी होना है।

सामाजिक मनोवृत्ति : हम जिस देश या समाज में रहते हैं यहां के लोगों की सामाजिक मनोवृत्ति ही ऐसी है कि अक्षम बालक या विशिष्ट बालको को नकारात्मक भाव से देखते हैं उनके मन में उस बालक के प्रति पहले से ही नकारात्मक भावना बैठ चुका है कि यह बालक आगे अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाएगा साथ ही उनके परिवार या माता–पिता उन्हें यूं ही छोड़ देते हैं। उन्हें समाज से दूर रखते हैं। उन्हें शिक्षा देना भी नहीं चाहते और जो बालक आगे भी बढ़ना चाहते हैं उनके मन में यह बातें बैठा दी जाती हैं कि तुमसे ये नहीं हो पाएगा, तुम नहीं कर पाओगे। ये सामाजिक मनोवृत्ति समावेशी शिक्षा की समस्याओं का एक अहम हिस्सा ही है जो हर एक सामान्य व्यक्ति के दिमाग में घर कर बैठा है।

शारीरिक बाधाएं : समावेशी शिक्षा की और एक बड़ी समस्या यह भी है कि जो बालक शारीरिक रूप से अक्षम है बाधिर है ऐसे बालकों को अधिगम में समस्या होती ही है और वह किसी भी चीज

को धीरे धीरे सीखते हैं उन्हें सीखने में बहुत ज्यादा मेहनत की आवश्यकता होती है पर उनके इन समस्याओं को नजर अंदाज कर उनके साथ सामान्य बालक जैसे ही व्यवहार, शिक्षण विधियां, प्रवृत्तियों आदि का प्रयोग किया जाता है। जिससे उनमें समस्या उत्पन्न होने लगती हैं।

पाठ्यक्रमः पाठ्यक्रम निर्माण करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पाठ्यक्रम लाचीला, उपयोगी एवं सामान्य एवं विशिष्ट बालक या अक्षम बालक सभी के अनुरूप हो।

भाषा और संवाद में समस्या. जैसे की हम सब जानते हैं कि समावेशी शिक्षा में हर तरह के बालक शिक्षा ग्रहण करने आते हैं जिसमें कुछ बालक ऐसे होते हैं जो श्रावण वाचन लेखन पठन में बहुत ही पीछे होते हैं। जिसके कारण भाषा को समझने और संवाद करने जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। इससे यह पता चलता है कि समावेशी शिक्षा इतनी आसान नहीं है। इन समस्याओं का सामना सभी शिक्षक नहीं कर पाते है।

भारतीय शिक्षा नीतियां से बाधाएंः भारत में बहुत से ऐसे शिक्षा नीतियां हैं जो समावेशी शिक्षा के बीच रुकावट या बाधा उत्पन्न करती है शिक्षक या स्कूल उन नीतियों के दायरे में रहते हैं जो समावेशी शिक्षा में समस्या उत्पन्न करती है।

निष्कर्ष :– शिक्षा में समावेश की अवधारणा केवल कक्षा की दीवारों या विद्यालय परिसर तक ही सीमित नहीं है। विचार जीवन के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव लाने का है । कक्षा में छोटे कदम समावेशी प्रकृति को उजागर करने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, दोपहर के भोजन में भोजन के बक्से साझा करने जैसी गतिविधियों के माध्यम से शुरुआत की जा सकती है । पाठ योजनाओं में प्रासंगिक उदाहरणों का उपयोग करने से शिक्षण के दायरे को व्यापक बनाने में मदद मिल सकती है । विविध संस्कृतियों से उपमाओं और कहानियों को शामिल करना और छात्रों को दूसरों के साथ जुड़ने में मदद करने वाले असाइनमेंट देना एक और तरीका है। सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए विषय को वास्तविक दुनिया के मुद्दों से जोड़ा जाना चाहिए। वैश्वीकरण के बढ़ने के साथ, लोगों को विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों में काम करने की आवश्यकता है । कक्षा में समावेशी शिक्षा और विविधता के संपर्क में आने वाले छात्रों को ऐसे समाज में रहने और काम करने में आसानी होगी।

References:

Banga, C. L. (2015). Inclusive Education in the Indian Context, International Multidisciplinary e-Journal, 4(3), p.67-74.

Dash, N. (2006): Inclusive Education Why Does it Matter? Edutracks, 5(11), p. 5-10

Miles, S. &Singal, N. (in press). The Education for All and Inclusive Education debate: Conflict, Contradiction or Opportunity? International Journal of Inclusive Education.

Ministry of Primary and Mass Education, Government of Bangladesh. (2015). Education for All 2015 National

Singh, J. D. (2016). INCLUSIVE EDUCATION IN INDIA – CONCEPT, NEED AND CHALLENGES, Scholarly Research Journal of Social Science and Humanities, 3(13), p. 3222-3232

UNESCO. (1990) World Declaration on Education for All. Paris: UNESCO.

UNESCO. (1994).Final Report: World conference on special needs education: Access and quality. Paris: UNESCO.

UNESCO. (2008).The EFA Global Monitoring Report. Education for All by 2015. Will we make it? Paris: UNESCO

UNESCO. (2010). Education for All movement.